आवश्यक निवेदन

प्रस्तुत अध्ययन सामग्री, तालिकाएँ एवं चित्र आदि श्रीमती सारिका विकास छाबड़ा द्वारा तैयार किये गए हैं |

इनका अन्यत्र एवं अन्य भाषा में उपयोग करने के पूर्व उनसे अनिवार्यतः संपर्क कर लें |

www.free-power-point-templates.com

प्ररूपणा 7 - इन्द्रिय मार्गणा

आचार्य नेमिचंद सिद्धांतचक्रवर्ती

www.free-power-point-templates.com

अहमिंदा जह देवा, अविसेसं अहमहंति मण्णंता।
ईसंति एक्कमेक्कं, इंदा इव इंदिये जाण॥164॥

- अर्थ - जिस प्रकार अहमिन्द्र देवों में दूसरे की अपेक्षा न रखकर प्रत्येक अपने-अपने को स्वामी मानते हैं, उसी प्रकार इन्द्रियाँ भी हैं ॥164॥

www.free-power-point-templates.com

इन्द्रिय स्वरूप

"इन्दतीति इन्द्र"- जो आज्ञा और ऐश्वर्य वाला है वह इन्द्र है अर्थात् आत्मा ही इन्द्र है| आत्मा को पदार्थों को जानने में जो लिंग निमित्त होता है वह इन्द्र का लिंग इन्द्रिय कही जाती है |

जो गूढ़ पदार्थ का ज्ञान कराता है, उसे लिंग कहते हैं | अतः जो सूक्ष्म आत्मा के अस्तित्व का ज्ञान कराने में लिंग अर्थात् कारण है वह इन्द्रिय कहलाती है |

इन्द्र शब्द नामकर्म का वाची है| ऐसे नामकर्म के द्वारा जो रची गई है वह इन्द्रिय है|

मदिआवरणखओवसमुत्थविसुद्धी हु तज्जबोहो वा।
भाविंदियं तु दव्वं, देहुदयजदेहचिण्हं तु॥165॥

- अर्थ - इन्द्रिय के दो भेद हैं - भावेन्द्रिय एवं द्रव्येन्द्रिय।
- मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न होने वाली विशुद्धि अथवा उस विशुद्धि से उत्पन्न होने वाले उपयोगात्मक ज्ञान को भावेन्द्रिय कहते हैं। और
- शरीर नामकर्म के उदय से बननेवाले शरीर के चिह्न-विशेष को द्रव्येन्द्रिय कहते हैं ॥165॥

www.free-power-point-templates.com

इन्द्रिय

द्रव्येन्द्रिय

शरीर नामकर्म के उदय से बननेवाले शरीर के चिह्न-विशेष

भावेन्द्रिय

मतिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न होने वाली विशुद्धि अथवा उस विशुद्धि से उत्पन्न होने वाला उपयोगात्मक ज्ञान

www.free-p

भावेन्द्रिय

लब्धि

मतिज्ञानावरणादि कर्म के क्षयोपशम से उत्पन्न विशुद्धि, उघाड़

उपयोग

विशुद्धि (लब्धि) से उत्पन्न प्रवर्तनरूप ज्ञान

www.free-power-point-templates.com

द्रव्येन्द्रिय

- **निर्वृत्ति**
  - जिन प्रदेशों के द्वारा विषयों को जानते हैं
- **उपकरण**
  - जो निर्वृत्ति के सहकारी, निकटवर्ती हैं

www.free-power-point-templates.com

निर्वृत्ति के भेद

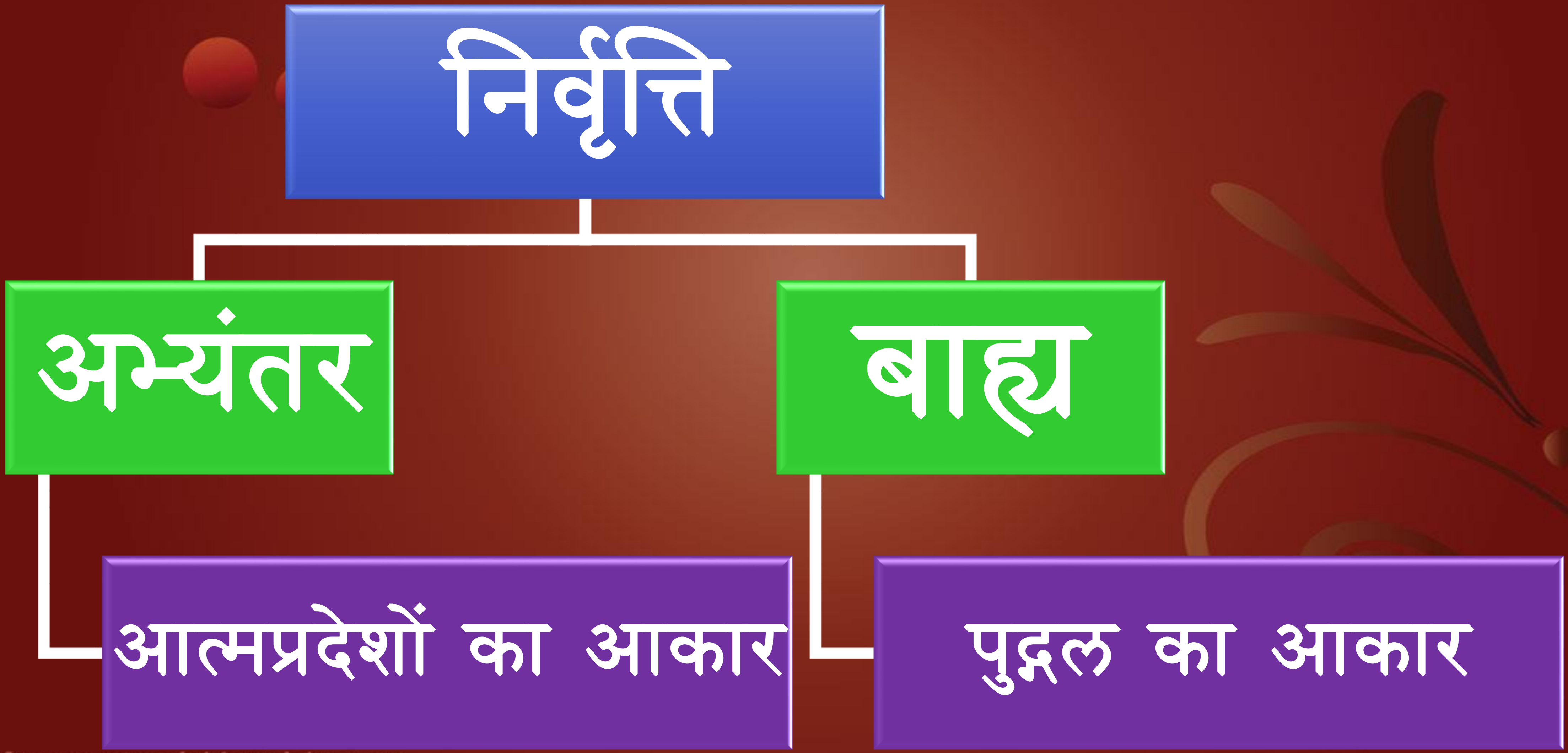

www.free-power-point-templates.com

उपकरण के भेद

- उपकरण
  - अभ्यंतर
    - नेत्र में काला, सफेद मंडल
  - बह्य
    - नेत्र की पलकें, भौंहें

www.free

ज्ञान की प्रगट प्राप्त शक्ति	लब्धि
इस शक्ति का प्रयोग	उपयोग
इस उपयोग में सहकारी साधन	द्रव्य इन्द्रिय
द्रव्य इन्द्रिय के लिये सहकारी	उपकरण

www.free-power-point-templates.com

फासरसगंधरूवे, सद्दे णाणं च चिण्हयं जेसिं।
इगिबितिचदुपंचिंदिय, जीवा णियभेयभिण्णाओ॥166॥

- अर्थ - जिन जीवों के बाह्य चिह्न (द्रव्येन्द्रिय) हो और उसके द्वारा होने वाला स्पर्श, रस, गंध, रूप, शब्द इन विषयों का ज्ञान हो उनको क्रम से एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय जीव कहते हैं, और
- इनके भी अनेक अवान्तर भेद हैं ॥166॥

www.free-power-point-templates.com

इन्द्रिय मार्गणा के भेद

- एकेन्द्रिय
- द्वीन्द्रिय
- त्रीन्द्रिय
- चतुरिन्द्रिय
- पंचेन्द्रिय
  - संज्ञी
  - असंज्ञी

www.free-power-point-templates.com

इंद्रिय मार्गणा के भेदों का स्वरूप

एकेंद्रिय

- जिनके स्पर्शनरूप बाह्य चिह्न हो और स्पर्श संबंधी ज्ञान हो, उसे एकेंद्रिय कहते हैं |

द्वीन्द्रिय

- जिनके स्पर्शन, रसनारूप बाह्य चिह्न हों और स्पर्श, रस संबंधी ज्ञान हो, उसे द्वीन्द्रिय कहते हैं |

त्रीन्द्रिय

- जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राणरूप बाह्य चिह्न हों और स्पर्श, रस, गंध संबंधी ज्ञान हो, उसे त्रीन्द्रिय कहते हैं |

www.free-power-point-templates.com

इंद्रिय मार्गणा के भेदों का स्वरूप

चतुरिन्द्रिय

- जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षुरूप बाह्य चिह्न हों और स्पर्श, रस, गंध, वर्ण संबंधी ज्ञान हो, उसे चतुरिन्द्रिय कहते हैं |

पंचेन्द्रिय

- जिनके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्णरूप बाह्य चिह्न हों और स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, शब्द संबंधी ज्ञान हो, उसे पंचेन्द्रिय कहते हैं |

www.free-power-point-templates.com

इन्द्रिय मार्गणा के भेद एवं उदाहरण

जीव	बाह्य चिह्न (द्रव्येन्द्रिय)	किसका ज्ञान (भावेन्द्रिय)	उदाहरण
एकेन्द्रिय	स्पर्शन	स्पर्श	पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति
द्वीन्द्रिय	स्पर्शन, रसना	स्पर्श, रस	लट, शंख, सीप, केंचुआ, जोंक आदि
त्रीन्द्रिय	स्पर्शन, रसना, घ्राण	स्पर्श, रस, गंध	चींटी, जू, लींख, खटमल, बिच्छू आदि
चतुरिन्द्रिय	स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु	स्पर्श, रस, गंध, रूप	मच्छर, भौंरा, मक्खी, तितली, डांस, पतंगा आदि
पंचेन्द्रिय	स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण	स्पर्श, रस, गंध, रूप, शब्द	मनुष्य, देव, नारकी, पशु-पक्षी

एइंदियस्स फुसणं, एक्कं वि य होदि सेसजीवाणं।
होंति कमउड्ढियाइं, जिब्भाघाणच्छिसोत्ताइं॥167॥

- अर्थ - एकेन्द्रिय जीव के एक स्पर्शनेन्द्रिय ही होती है।
- शेष जीवों के क्रम से रसना (जिह्वा), घ्राण, चक्षु और श्रोत्र बढ़ जाते हैं ॥167॥

www.free-power-point-templates.com

इन्द्रियों का क्रम

१ इन्द्रिय
स्पर्शन

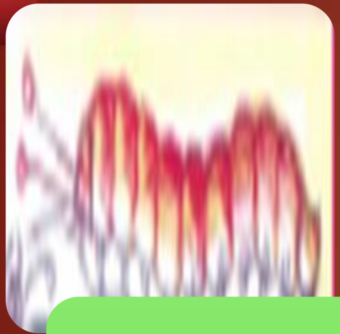

२ इन्द्रिय

- स्पर्शन, रसना

३ इन्द्रिय

- स्पर्शन, रसना, घ्राण

४ इन्द्रिय

- स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु

५ इन्द्रिय

- स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण

www.free-power-point-templates.com

धणुवीसडदसयकदी, जोयणछादालहीणतिसहस्सा।
अट्ठसहस्स धणूणं, विसया दुगुणा असण्णि त्ति॥168॥

- अर्थ - एकेन्द्रिय के स्पर्शन, द्वीन्द्रिय के रसना एवं त्रीन्द्रिय के घ्राण का उत्कृष्ट विषयक्षेत्र क्रम से चार सौ धनुष, चौसठ धनुष, सौ धनुष प्रमाण है।
- चतुरिन्द्रिय के चक्षु का उत्कृष्ट विषयक्षेत्र दो हजार नव सौ चौवन योजन है। और आगे असंज्ञीपर्यन्त विषयक्षेत्र दूना-दूना बढ़ता गया है।
- असैनी के श्रोत्रेन्द्रिय का उत्कृष्ट विषयक्षेत्र आठ हजार धनुष प्रमाण है ॥168॥

www.free-power-point-templates.com

सण्णिस्स वार सोदे, तिण्हं णव जोयणाणि चक्खुस्स। सत्तेतालसहस्सा, बेसदतेसट्ठिमदिरेया॥169॥

- अर्थ - संज्ञी जीव के स्पर्शन, रसना, घ्राण इन तीन इन्द्रियों में से प्रत्येक का उत्कृष्ट विषयक्षेत्र नौ-नौ योजन है और
- श्रोत्रेन्द्रिय का उत्कृष्ट विषयक्षेत्र बारह योजन है तथा
- चक्षुरिन्द्रिय का उत्कृष्ट विषयक्षेत्र सैतालीस हजार दो सौ त्रेसठ योजन से कुछ अधिक है ॥169॥

www.free-power-point-templates.com

इन्द्रियों का विषय क्षेत्र

अर्थात् एक-एक इन्द्रिय कितना जान सकती है?
इन्द्रियों के द्वारा कितने दूर तक का विषय ज्ञात हो सकता है?

इन्द्रिय	एकेन्द्रिय	द्वीन्द्रिय	त्रीन्द्रिय	चतुरिन्द्रिय	असैनी पंचेन्द्रिय	सैनी पंचेन्द्रिय
	धनुष में	धनुष में	धनुष में	धनुष में	धनुष में	योजन में
स्पर्शन	400	800	1600	3200	6400	9
रसना	—	64	128	256	512	9
घ्राण	—	—	100	200	400	9
चक्षु	—	—	—	2954 योजन	5908 योजन	$47263 \frac{7}{20}$
श्रोत्र	—	—	—	—	8000	12

क्या इन्द्रियाँ छूकर ही जानती हैं?

- चक्षु इन्द्रिय और मन बिना छूकर ही जानते हैं ।
- परन्तु शेष 4 इन्द्रियाँ पदार्थों को स्पर्श कर और बिना स्पर्श कर दोनों प्रकार से जानती हैं।
  - देखें : धवला पु. 13, पृष्ठ 225
  - देखें : धवला पु. 9, पृष्ठ 159
- हम आपके वर्तमान में जो सामान्य ज्ञान है, वह प्राप्यकारी (छूकर जानने वाला) है । परन्तु किसी जीव के विशेष क्षयोपशम से वह बिना पदार्थों के स्पर्श से भी पदार्थों को जान सकता है | जैसे चक्रवर्ती आदि का इंद्रिय-ज्ञान

www.free-power-point-templates.com

पुट्ठं सुणेइ सद्दं, अप्पुट्ठं चेय पस्ससे रूवं ।
गंधं रसं च फासं, बद्धं पुट्ठं च जाणादि ॥ध. 9/54॥

- अर्थ: चक्षु रूप को अस्पृष्ट ही ग्रहण करती है, और 'च' शब्द से मन भी अस्पृष्ट ही वस्तु को ग्रहण करता है। शेष इन्द्रियाँ गंध, रस और स्पर्श को बद्ध अर्थात् अपनी-अपनी इन्द्रियों में नियमित और स्पृष्ट ग्रहण करती हैं, और 'च' शब्द से अस्पृष्ट भी ग्रहण करती हैं। (धवल पु. 9, गाथा 54)

www.free-power-point-templates.com

तिण्णिसयसट्ठिविरहिद, लक्खं दसमूलताडिदे मूलम्।
णवगुणिदे सट्ठिहदे, चक्खुप्फासस्स अद्धाणं॥170॥

- अर्थ - तीन सौ साठ कम एक लाख योजन जम्बूद्वीप के विष्कम्भ (व्यास, Diameter) का वर्ग करना और
- उसका दशगुणा करके वर्गमूल निकालना,
- इससे जो राशि उत्पन्न हो उसमें नव का गुणा और साठ का भाग देने से चक्षुरिन्द्रिय का उत्कृष्ट विषयक्षेत्र निकलता है ॥170॥

www.free-power-point-templates.com

चक्षु इन्द्रिय का उत्कृष्ट क्षेत्र कैसे बनता है ?

- एक सूर्य को पूरा जंबूद्वीप भ्रमण करने में 2 दिन लगते हैं—याने 60 मुहूर्त
- जंबूद्वीप भ्रमण का क्षेत्र = $\pi \times D$
- याने जंबूद्वीप की परिधि (Circumference)
- $= \sqrt{10} \times 99640$ योजन
- = 315089 योजन
- परिधि निकालने के लिए 1 लाख योजन में से 360 योजन कम किये क्योंकि जब सूर्य जंबूद्वीप के इतना अंदर आकर भ्रमण करता है तब चक्रवर्ती उसे देख पाता है ।
- नोट: π का प्रमाण आगम में $\sqrt{10}$ माना है ।

www.free-power-point-templates.com

चक्षु इन्द्रिय का उत्कृष्ट क्षेत्र कैसे बनता है ?

- एक सूर्य 60 मुहूर्त में 315089 योजन भ्रमण करता है,
- तो 9 मुहूर्त में कितना भ्रमण होगा ?
- $\frac{315089 \text{ योजन}}{60 \text{ मुहूर्त}} \times 9 \text{ मुहूर्त} = 47263 \frac{7}{20}$ योजन

www.free-power-point-templates.com

चक्षु इंद्रिय का यह क्षेत्र कब बनता है?

- कर्क संक्रांति को जब 18 मुहूर्त का दिन और 12 मुहूर्त की रात होती है
- तब चक्रवर्ती अयोध्या में अपने महल की छत से
- निषध पर्वत पर उदित सूर्य के विमान में जिनबिम्ब का दर्शन करता है ।

www.free-power-point-templates.com

चक्खूसोदं घाणं, जिब्भायारं मसूरजवणाली।
अतिमुत्तखुरप्पसमं, फासं तु अणेयसंठाणं॥171॥

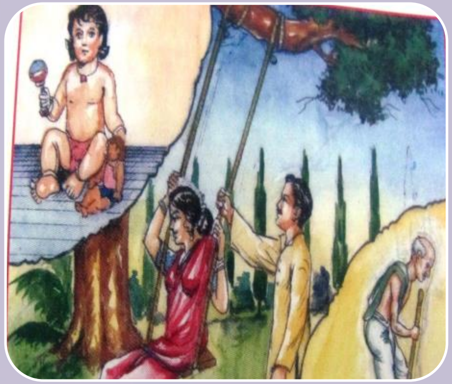

अर्थ - मसूर के समान चक्षु का,

जव की नाली के समान श्रोत्र का,

तिल के फूल के समान घ्राण का तथा

खुरपा के समान जिह्वा का आकार है और

स्पर्शनेन्द्रिय के अनेक आकार हैं ।।१७१।।

अंगुलअसंखभागं, संखेज्जगुणं तदो विसेसहियं।
तत्तो असंखगुणिदं, अंगुलसंखेज्जयं तत्तु॥172॥

- अर्थ - आत्मप्रदेशों की अपेक्षा चक्षुरिन्द्रिय का अवगाहन घनांगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण है और
- इससे संख्यातगुणा श्रोत्रेन्द्रिय का अवगाहन है।
- श्रोत्रेन्द्रिय से पल्य के असंख्यातवें भाग अधिक घ्राणेन्द्रिय का अवगाहन है।
- घ्राणेन्द्रिय से पल्य के असंख्यातवें भाग गुणा रसनेन्द्रिय का अवगाहन हैं जो घनांगुल के संख्यातवें भागमात्र है ॥172॥

www.free-power-point-templates.com

सुहमणिगोदअपज्जत्तयस्स जादस्स तदियसमयम्हि।
अंगुलअसंखभागं जहण्णमुक्कस्सयं मच्छे॥173॥

- अर्थ - स्पर्शनेन्द्रिय की जघन्य अवगाहना घनांगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण है और यह अवगाहना सूक्ष्म निगोदिया लब्ध्यपर्याप्तक के उत्पन्न होने के तीसरे समय में होती है।
- उत्कृष्ट अवगाहना महामत्स्य के होती है, इसका प्रमाण संख्यात घनांगुल है ॥173॥

www.free-power-point-templates.com

इन्द्रियों की अवगाहना

इन्द्रिय	अवगाहना	
चक्षु	$\frac{\text{घनांगुल}}{\text{असं.}}$	
कर्ण (श्रोत्र)	चक्षु-आकार × संख्यात	
घ्राण	श्रोत्राकार + $\frac{\text{श्रोत्राकार}}{\text{पल्य}/\text{असं.}}$	
रसना	घ्राणाकार × $\frac{\text{पल्य}}{\text{असं.}}$ = $\frac{\text{घनांगुल}}{\text{सं.}}$	
स्पर्शन	जघन्य = $\frac{\text{घनांगुल}}{\text{असं.}}$ (सूक्ष्म निगोदिया)	उत्कृष्ट = संख्यात घनांगुल (महामत्स्य)

www.free-power-point-templates.com

स्पर्शन को छोड़कर शेष 4 इन्द्रियों में किसकी कम / ज्यादा अवगाहना

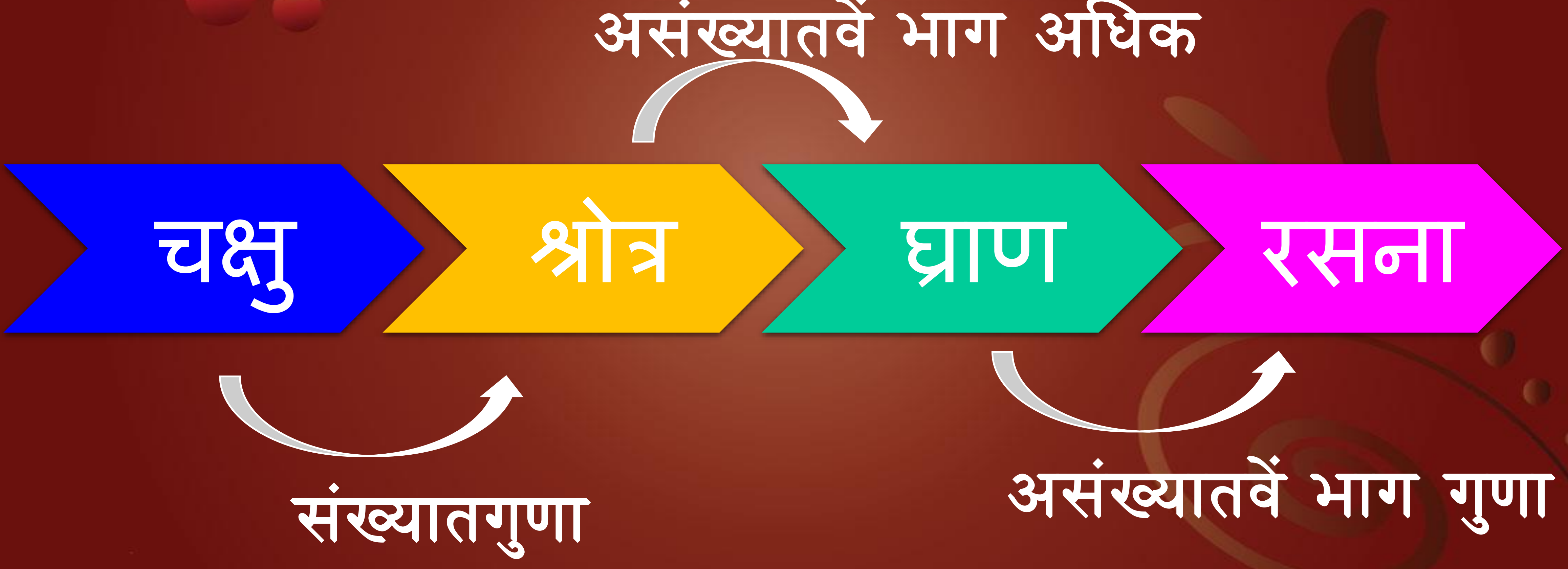

www.free-power-point-templates.com

ण वि इंदियकरणजुदा, अवग्गहादीहि गाहया अत्थे।
णेव य इंदियसोक्खा, अणिंदियाणंतणाणसुहा॥174॥

- अर्थ - जो जीव नियम से इन्द्रियों के करण भौंहें टिमकारना आदि व्यापार, उनसे संयुक्त नहीं है, इसलिये ही अवग्रहादिक क्षयोपशम ज्ञान से पदार्थ का ग्रहण (जानना) नहीं करते। तथा
- इन्द्रियजनित विषय-संबंध से उत्पन्न सुख उससे संयुक्त नहीं हैं वे अर्हंत और सिद्ध अतीन्द्रिय अनंत ज्ञान और अतीन्द्रिय अनंत सुख से विराजमान जानना। क्योंकि उनका ज्ञान और सुख शुद्धात्मतत्त्व की उपलब्धि से उत्पन्न हुआ है ॥174॥

www.free-power-point-templates.com

अतीन्द्रिय जीव

- जीवन-मुक्त (अरिहंत)
- परम-मुक्त (सिद्ध)

www.free-power-point-templates.com

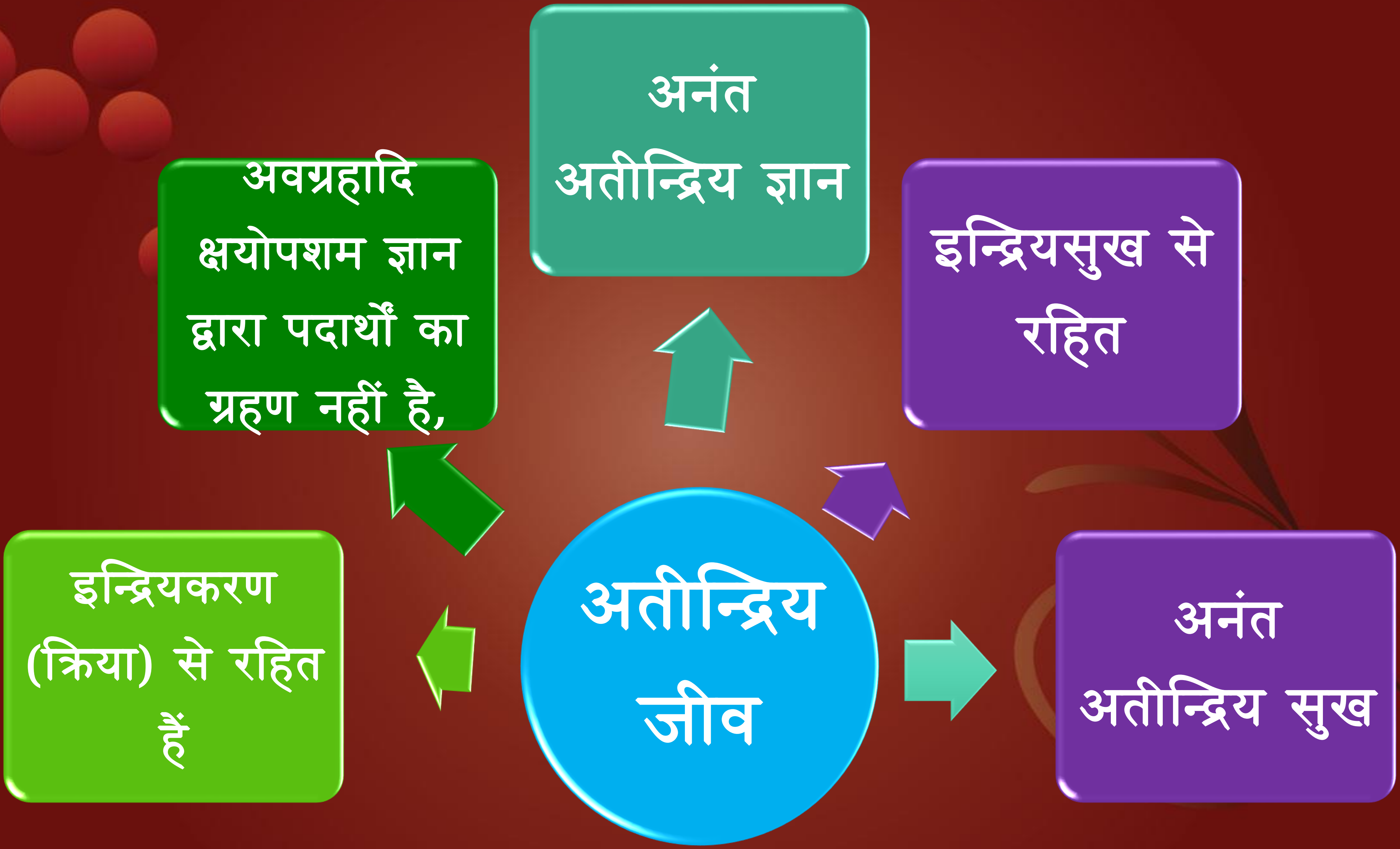

www.free-power-point-templates.com

थावरसंखपिपीलिय, भमरमणुस्सादिगा सभेदा जे। जुगवारमसंखेज्जा, णंताणंता णिगोदभवा॥175॥

- अर्थ - स्थावर एकेन्द्रिय जीव, शंख आदिक द्वीन्द्रिय, चींटी आदि त्रीन्द्रिय, भ्रमर आदि चतुरिन्द्रिय, मनुष्यादि पंचेन्द्रिय जीव अपने-अपने अंतर्भेदों से सहित असंख्यातासंख्यात हैं और
- निगोदिया जीव अनंतानन्त हैं ॥175॥

www.free-power-point-templates.com

संक्षेप से एकेन्द्रियादि जीवों की संख्या

जीव	संख्या
एकेन्द्रिय में निगोदिया	अनंतानंत
एकेन्द्रिय में निगोदिया को छोड़कर शेष सर्व	असंख्यातासंख्यात
द्वीन्द्रिय	असंख्यातासंख्यात
त्रीन्द्रिय	असंख्यातासंख्यात
चतुरिन्द्रिय	असंख्यातासंख्यात
पंचेन्द्रिय	असंख्यातासंख्यात

तसहीणो संसारी, एयक्खा ताण संखगा भागा।
पुण्णाणं परिमाणं, संखेज्जदिमं अपुण्णाणं॥176॥

- अर्थ - संसार राशि में से त्रस राशि को घटाने पर जितना शेष रहे उतने ही एकेन्द्रिय जीव हैं और
- एकेन्द्रिय जीवों की राशि में संख्यात का भाग देने पर एक भागप्रमाण अपर्याप्तक और शेष बहुभागप्रमाण पर्याप्तक जीव हैं ॥176॥

www.free-power-point-templates.com

सर्व जीव

- संसारी
  - एकेन्द्रिय
    - पर्याप्त — बहुभाग — $\frac{\text{एकेन्द्रिय}}{\text{संख्यात}} \times (\text{संख्यात} - 1)$
    - अपर्याप्त — एकभाग — $\frac{\text{एकेन्द्रिय}}{\text{संख्यात}}$
  - शेष
- मुक्त

www.free-power-point-templates.com

एकेंद्रिय जीव

- संसारी जीव = सर्व जीवराशि – मुक्त जीवराशि
- एकेन्द्रिय = संसारी जीव – त्रस जीव
- अपर्याप्त एकेन्द्रिय = $\frac{\text{एकेन्द्रिय}}{\text{संख्यात}}$
- पर्याप्त एकेन्द्रिय = शेष बहुभाग
- इसे लिखने का तरीका → $\frac{\text{एकेन्द्रिय}}{\text{संख्यात}} \times (\text{संख्यात} - 1)$

www.free-power-point-templates.com

बादरसुहमा तेसिं, पुण्णापुण्णे त्ति छव्विहाणं पि।
तक्कायमग्गणाये, भणिज्जमाणक्कमो णेयो॥177॥

- अर्थ - एकेन्द्रिय जीवों के सामान्य से दो भेद हैं – बादर और सूक्ष्म।
- इसमें भी प्रत्येक के पर्याप्तक और अपर्याप्तक के भेद से दो-दो भेद हैं।
- इसप्रकार एकेन्द्रियों की छह राशियों की संख्या का क्रम कायमार्गणा में कहेंगे वहाँ से ही समझ लेना ॥177॥

www.free-power-point-templates.com

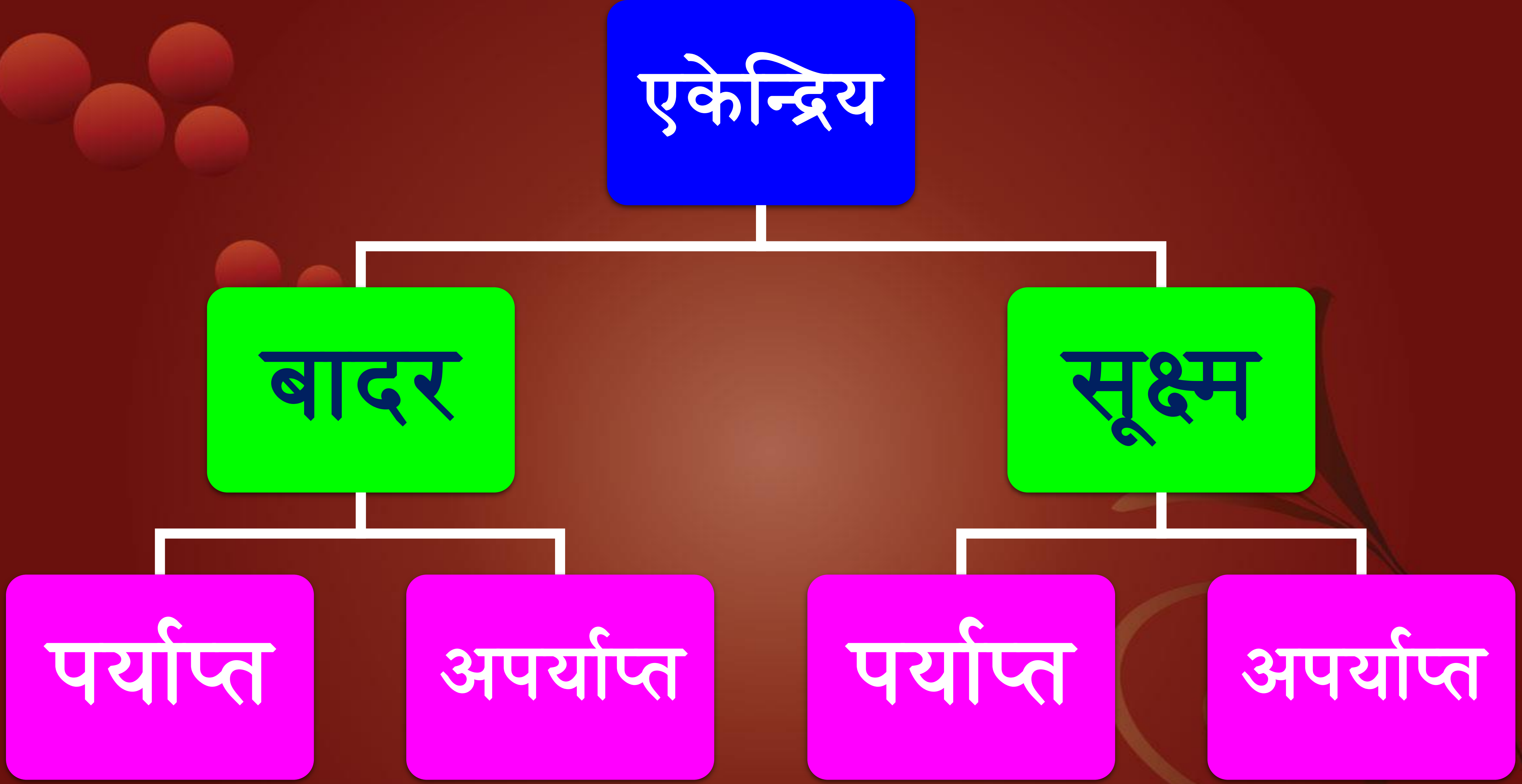

नोटः इनकी संख्या काय मार्गणा में बताएँगे ।

www.free-power-point-templates.com

बितिचपमाणमसंखेणवहिदपदरंगुलेण हिदपदरं।
हीणकमं पडिभागो, आवलियासंखभागो दु॥178॥

- अर्थ - प्रतरांगुल के असंख्यातवें भाग का जगतप्रतर में भाग देने से जो लब्ध आवे उतना सामान्य से त्रसराशि का प्रमाण है।
- परन्तु पूर्व-पूर्व द्वीन्द्रियादिक की अपेक्षा उत्तरोत्तर त्रीन्द्रियादिक का प्रमाण क्रम से हीन-हीन है और
- इसका प्रतिभागहार आवली का असंख्यातवाँ भाग है ॥178॥

www.free-power-point-templates.com

त्रस जीवों का प्रमाण

- $\dfrac{\text{जगत् प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल}/\text{असंख्यात}}$ = सर्व त्रस जीव

- इनमें भी द्वीन्द्रिय सर्वाधिक हैं,
- उनसे कुछ कम त्रीन्द्रिय हैं,
- उनसे कुछ कम चतुरिन्द्रिय हैं,
- सबसे कम पंचेन्द्रिय हैं ।

www.free-power-point-templates.com

बहुभागे समभागो चउण्णमेदेसिमेक्कभागम्हि।
उत्तकमो तत्थ वि बहुभागो बहुगस्स देओ दु॥179॥

- अर्थ - त्रसराशि में आवली के असंख्यातवें भाग का भाग देकर लब्ध बहुभाग के समान चार भाग करना और
- एक-एक भाग को द्वीन्द्रियादि चारों ही में विभक्त कर,
- शेष एक भाग में फिर से आवली के असंख्यातवें भाग का भाग देना चाहिये और
- लब्ध बहुभाग को बहुत संख्यावाले को देना चाहिये।
- इसप्रकार अंतपर्यंत करना चाहिये॥179॥

www.free-power-point-templates.com

प्रतिभाग में बाँटने का तरीका

- उदाहरण—माना कि सर्व त्रस राशि = 256; एवं $\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} = 4$

- $\frac{\text{त्रस जीव}}{\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}}} = \frac{256}{4} = 64$ (एक भाग)

- बहुभाग = सर्व राशि – एक भाग

  192 = 256 – 64

बहुभाग के चार समान भाग करो।

- $\frac{192}{4} = 48$

www.free-power-point-templates.com

- इसे प्रत्येक जीवराशि में बाँट दो

	द्वी.	त्री.	चतु.	पंचे.
समभाग	48	48	48	48

- शेष रहे एकभाग (64) को पुनः प्रतिभाग से भाग दो ।
- $\frac{64}{4} = 16$

- एकभाग अलग रखकर बहुभाग द्वीन्द्रिय को दो ।
- 64 – 16 = 48 (द्वीन्द्रिय का प्रतिभाग)
- शेष एकभाग को पुनः प्रतिभाग से भाग लगाओ ।

www.free-power-point-templates.com

- $\frac{16}{4} = 4$
- बहुभाग को त्रीन्द्रिय में दो।
- 16 – 4 = 12 (त्रीन्द्रिय का प्रतिभाग)
- शेष एकभाग को पुनः प्रतिभाग से भाग दो।
- $\frac{4}{4} = 1$
- बहुभाग को चतुरिन्द्रिय को दो। 4 – 1 = 3
- शेष एकभाग को पंचेन्द्रिय को दो। 1

www.free-power-point-templates.com

सर्व त्रस जीवों की संख्या

	द्वी.	त्री.	चतु.	पंचे.
समभाग	48	48	48	48
प्रतिभाग	48	12	3	1
कुल संख्या	96	60	51	49

www.free-power-point-templates.com

इसी प्रकार वास्तविक गणित में करना चाहिए । तो भी

प्रत्येक जीव	$\frac{\text{जगत् प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल}/\text{असंख्यात}}$
द्वीन्द्रिय जीव कुल त्रस जीवों के चतुर्थ भाग से कुछ अधिक है ।	$\frac{\text{त्रस जीव}}{4}+$
त्रीन्द्रिय जीव चतुर्थ भाग से कुछ कम हैं याने	$\frac{\text{त्रस जीव}}{4}-$
चतुरिन्द्रिय जीव कुछ और कम हैं —	$\frac{\text{त्रस जीव}}{4}=$
पंचेन्द्रिय जीव कुछ और कम हैं —	$\frac{\text{त्रस जीव}}{4}\equiv$

तिबिपचपुण्णपमाणं, पदरंगुलसंखभागहिदपदरं।
हीणकमं पुण्णूणा, बितिचपजीवा अपज्जत्ता॥180॥

- अर्थ - प्रतरांगुल के संख्यातें भाग का जगतप्रतर में भाग देने से जो लब्ध आवे उतना ही त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय में से प्रत्येक के पर्याप्तक का प्रमाण है।
- परन्तु यह प्रमाण 'बहुभागे समभागो' इस गाथा में कहे हुए क्रम के अनुसार उत्तरोत्तर हीन-हीन है।
- अपनी-अपनी समस्त राशि में से पर्याप्तकों का प्रमाण घटाने पर अपर्याप्तक द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, और पंचेन्द्रिय जीवों का प्रमाण निकलता है ॥180॥

www.free-power-point-templates.com

- त्रस जीवों में पर्याप्त जीव = जगत् प्रतर / (प्रतरांगुल / संख्यात)
- इसे भी पूर्वोक्त प्रकार से समभाग से बांटना, परन्तु प्रतिभाग का क्रम यह रखना—
- त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय ।
- अपनी-अपनी संख्या में से पर्याप्त संख्या घटाने पर अपनी-अपनी अपर्याप्त संख्या निकलती है ।

www.free-power-point-templates.com

त्रस जीवों की संख्या

कुल त्रस जीव = $$\frac{\text{जगत् प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल}/\text{असंख्यात}}$$

द्वीन्द्रिय	सामान्य से — प्रत्येक की संख्या = $\frac{\text{जगत् प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल}/\text{असंख्यात}}$
त्रीन्द्रिय	
चतुरिन्द्रिय	
पंचेन्द्रिय	

विशेष अपेक्षा : द्वीन्द्रिय > त्रीन्द्रिय > चतुरिन्द्रिय > पंचेन्द्रिय

त्रस पर्याप्तकों की संख्या

कुल त्रस पर्याप्तक = $\dfrac{\text{जगत् प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल}/\text{संख्यात}}$

<table>
<tr><td>द्वीन्द्रिय</td><td rowspan="4">सामान्य से — प्रत्येक की संख्या = $\dfrac{\text{जगत् प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल}/\text{संख्यात}}$</td></tr>
<tr><td>त्रीन्द्रिय</td></tr>
<tr><td>चतुरिन्द्रिय</td></tr>
<tr><td>पंचेन्द्रिय</td></tr>
<tr><td colspan="2">विशेष अपेक्षा : त्रीन्द्रिय > द्वीन्द्रिय > पंचेन्द्रिय > चतुरिन्द्रिय</td></tr>
<tr><td colspan="2">यहाँ भी पूर्व के समान ही कुल पर्याप्त त्रस जीव 256 मानकर एवं $\dfrac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}}$ = 4 मानकर द्वीन्द्रियादिक पर्याप्तक जीवों की संख्या अपने क्रमानुसार निकाल लेना चाहिये ।</td></tr>
</table>

त्रस अपर्याप्त जीवों की संख्या

कुल त्रस अपर्याप्त जीव = $\frac{\text{जगत् प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल}/\text{असंख्यात}} - \frac{\text{जगत् प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल}/\text{संख्यात}} = \frac{\text{जगत् प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल}/\text{असंख्यात}}$

द्वीन्द्रिय अपर्याप्त	सामान्य से — प्रत्येक की संख्या = $\frac{\text{जगत् प्रतर}}{\text{प्रतरांगुल}/\text{असंख्यात}}$
त्रीन्द्रिय अपर्याप्त	
चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त	
पंचेन्द्रिय अपर्याप्त	

विशेष अपेक्षा : द्वीन्द्रिय > त्रीन्द्रिय > चतुरिन्द्रिय > पंचेन्द्रिय

www.free-power-point-templates.com

❀इन्द्रियों के जानने से लाभ ?

www.free-power-point-templates.com

- Reference : गोम्मटसार जीवकाण्ड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका, गोम्मटसार जीवकांड - रेखाचित्र एवं तालिकाओं में

Presentation developed by
Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 0731-2410880 , 94066-82889

www.free-power-point-templates.com